v/;k; 21

1	प्रार्थना

समूह का अगुवाः प्रार्थना के साथ आप परमेश्वर के लिए चेले बनाने वाले इस कोर्स व अपने समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2	आराधना(20 मिनट) (परमेश्वर की विशेषताएं) परमेश्वर महान व रचनात्मक है

मनन

'परमेश्वर महान व रचनात्मक है से सम्बन्धित शिक्षाओं को **पढ़ें व शिक्षा दें।**

पढ़ें भजन संहिता 139:13–18 ।

परमेश्वर ने हमारे शरीर को पूरी तरह से सिद्ध रूप प्रदान किया है। परमेश्वर बढ़ौतरी का रचयिता है और बढ़ौतरी की प्रक्रिया अपने आप में एक चमत्कार है। मनुष्य का शरीर अपने आप बढ़ता है और लगातार अपने आप को पुनःनवीन करता चला जाता है। परमेश्वर हमारे विचारों में आने वाले हर एक छोटे से छोटे जीव का रचने वाला है।

1. लहू का थक्का बनना

जब किसी व्यक्ति को कहीं चोट लग जाती है तो कुछ समय के लिए खून बहता है और फिर खून का थक्का बनते ही खून बहना रूक जाता है। वह खून का थक्का बाद में खुरन्ट का रूप ले लेता है तथा चोट ठीक हो जाती है। लेकिन खून का जमना अपने आप में एक जटिल प्रक्रिया है और किसी प्रकार के खतरे से बचने के लिए इसे काफी साफ सफाई की जरूरत पड़ती है। यदि आपके रक्त प्रवाह प्रणाली में किसी प्रकार का कोई छिद्र हो जाता है तो खून का थक्का बनना बहुत ज़रूरी होता है अन्यथा आपका खून बहता रहेगा और अन्ततः मृत्यु हो जाएगी। यदि खून गलत समय या गलत स्थान में जम जाए तो वह थक्का बनकर सारे रक्त प्रवाह को रोक देगा जैसा कि हृदय घात व किसी प्रकार के दौरे पड़ने पर होता है। उस चोट की वजह से बने थक्के का उपचार करना बहुत जरूरी है नहीं तो सम्पूर्ण रक्त प्रवाह प्रक्रिया जमने से व्यक्ति मर सकता है।

शरीर में बड़ी मात्रा में एन्जाइम्स(प्रोटीन जिनकी वजह से रासायनिक प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है) निष्क्रीय रूप में जमा रहते हैं, जो सक्रिय होने को तत्पर होते है। रक्त का जमना एक नदी से बनने वाले झरने या प्रपात के समान होता हैः एक अवयव दूसरे को सक्रिय करता है और दूसरा अवयव तीसरे को सक्रिय करता है। प्रपात के प्रत्येक खण्ड में ,कुछ एन्जाइम्स थक्के का गठन करते हैं और कुछ एन्जाइम्स थक्के को हटाने या फैलने से रोकने का काम करते हैं। इसके अलावा ये एन्जाइम्स कार्य करने अर्थात सक्रिय करने, बढ़ाने या उनकी गतिविधियों को रोकने के लिए दूसरे एन्ज़ाइम्स पर निर्भर होते हैं।थक्के को जमने तथा सही समय पर उसे खत्म होने के लिए इन एन्ज़ाइम्स की आवश्यकता होती है। रक्त जमने की प्रणाली एक ऐसी प्रणाली है जिसमें अनेकों अवयव पारस्परिक रूप में मिलकर थक्का बनने की प्रक्रिया में भाग लेते हैं। उनमें से किसी भी एक अवयव को हटा देने से यह प्रक्रिया प्रभावशाली ढंग से काम करना बन्द कर देती है। केवल परमेश्वर ही इस प्रकार की जमाने वाली जटिल प्रपात प्रणाली का निर्माण कर सकते हैं।

2. मानवीय देह की कोशिकाएं।

मनुष्य की देह में अनगिनत कोशिकाएं पायी जाती हैं। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि मनुष्य के एक किलो मांस में 2 000 000 000 000 से भी ज्यादा कोशिकाएं होती हैं। उनमें से प्रत्येक कोशिका के भीतर 10 शक्ति वर्धक प्लान्ट्स पाये जाते हैं जो मानवीय देह को काम करने के लिए शक्ति प्रदान करते हैं। लेकिन इनमें से प्रत्येक शक्तिवर्धक

पलान्ट्स 1 माइक्रोमीटर से छोटा होता है (1 मिलीमिटर में 1 हज़ार माइक्रोमीटर होते हैं)। ये शक्तिवर्धक बहुत कोशिकाएं बहुत छोटी होने के बावजूद भी मनुष्य को अपने सारे काम करने की शक्ति प्रदान करते हैं!

3. मानवीय फेफड़ों में हवा की थैलियां ।

मानवीय फेफड़ों में बड़ी मात्रा में छोटी नलकियां पायी जाती हैं जिनके सिरे पर हवा की थैलिया होती हैं। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि मनुष्य के फेफड़े में लगभग 6000 000 000 हवा की थैलियां होती हैं। इन हवा की थैलियों की दीवारें रक्त धमनियों से भरी होती है जो उन थैलियों से हवा को सोखकर मनुष्य की सम्पूर्ण देह को हवा प्रदान करती है। इन हवा की थैलियों की धमनियों को इतनी बुद्धिमानी के साथ तह बनाया गया है कि अगर उनकी तह को खोला जाए तो उसके द्वारा एक फुटबॉल के मैदान को धेरा जा सकता है। कल्पना करके देखिये कि कोई कैसे आपके फेफड़े के भीतर फुटबॉल के मैदान का बाड़ा बाधं देने वाली धमनी की तह बना सकता है।

सूक्ष्मदर्शी की सहायता से हम हमारी देह की कोशिकाओं व हमारे फेफड़ों में पायी जाने वाली हवा की थैलियों का अध्ययन कर सकते हैं। परन्तु इन कोशिकाओं और थैलियों को बनाने वाला है कौन?बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर ने मनुष्य को उसके भीतर हवा की थैलियों व कोशिकाओं के साथ बनाया है? यदि हम अपने ही शरीर की गहराई को नहीं नाप सकते, तो मनुष्य के शरीर को रचने वाले की गहराई को कैसे नाप सकते हैं? अद्‌भुत ढंग से रचे गये मानवीय शरीर का विद्यमान होना, अद्‌भुत परमेश्वर के विद्यमान होने को प्रमाणित करता है।

आराधना।

उस अद्‌भुत रचयिता की आराधना करें जिसने इन विद्यमान अति सूक्ष्म चीजों, तथा मानवीय देह की अदभुत व कल्पना से परे जटिल प्रणाली को रचा है। आपको अद्‌भुत रीति से रचने के लिए परमेश्वर की आराधना करें। तीन तीन लोगों के छोटे समूहों में बंटकर परमेश्वर की आराधना करें।

3	**बांटें** (20 मिनट)	**(शान्त समय)** **रोमियों 1–4**

आपने जो कुछ दिये गये बाइबल अनुच्छेद(रोमियो 1–4) से अपने शान्त समय में सीखा है उसे संक्षेप में बाटें या (अपनी कॉपी में से पढ़ें)।

बताने वाले व्यक्ति की बातों को ध्यान से सुने, उसे गम्भीरता से लें और स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**शिक्षा** (70 मिनट)	**(पवित्र आत्मा)** **पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व व उसके कार्य**

डोटा कोर्स में पवित्र आत्मा के सम्बन्ध में निम्नलिखित शिक्षाएं दी गयी हैं

मैनुएल 2, अध्याय 21	पवित्र आत्मा को स्वभाव, लोगों के जीवन में उसका काम और कलीसिया में उसका काम।
मैनुएल 2, परिशिष्ट 2.	पवित्र आत्मा मसीहियों को उनके कष्टों बीच में सम्भालता है।
मैनुएल 4, अध्याय 45	पवित्र आत्मा के प्रमुख कार्यः
	पवित्र आत्मा का बपतिस्मा, पवित्र आत्मा द्वारा भरा जाना तथा आत्मा के फल।
मैनुएल 7. अध्याय 35	पवित्र आत्मा के वरदान।
मैलुएल 7, परिशिष्ट 2.	पवित्र आत्मा के अतिरिक्त वरदान।

क.पवित्र आत्मा का स्वभाव

1. पवित्र आत्मा व्यक्ति है।

पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है। पवित्र आत्मा कोई काल्पनिक शक्ति नहीं बल्कि एक व्यक्ति है। वह सत्य बोलता है(यूहन्ना 14:16–17)वह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मध्यस्थता करता है(रोमियो 8:27),वह पापी स्वभाव के विपरीत इच्छा करता है (गलातियों 5:17)वह पाप के कारण शोकित होता है(इफिसियों 4:30:31)।

पवित्र आत्मा से सम्बन्ध।

पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व पर विश्वास करने के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम किस प्रकार उसका अनुभव करते हैं।

यदि पवित्र आत्मा केवल कोई शक्ति होता तो, हमारा लक्ष्य होता कि ' मैं पवित्र आत्मा की शक्ति या प्रभाव को प्राप्त कर सकता हूँ' (30% या 40 % इत्यादि)

यदि पवित्रआत्मा कोई व्यक्ति है तो हमारी मनसा यह होनी चाहिए कि, '' पवित्र आत्मा किसी प्रकार मुझ पर पूर्ण रीति से कब्जा कर सकता है?'' ' किस प्रकार पवित्र आत्मा मेरे जीवन के ज्यादातर क्षेत्रों में राज्य कर सकता है?' '' किस प्रकार मैं पवित्र आत्मा के साथ मज़बूत सम्बन्ध स्थापित कर सकता या उसकी अगुवाई के प्रति अधीन हो सकता हूँ?''

2. पवित्र आत्मा परमेश्वर है।

परमेश्वर ने अपने आप को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में प्रगट किया (देखें मैनुएल 2. परिशिष्ट 8)

हालांकि परमेश्वर स्वभाव अथाह है (अय्यूब 11:7–8 ;1 तीमुथियुस 6:15–16),परमेश्वर ने अपने आपको इस तरीके से प्रस्तुत किया है कि लोग उसे आसानी से समझ सकें। परमेश्वर ने अपने आपको कामों के द्वारा (यशायाह 43:13)और वचनों (मत्ती 4:4), आग (निर्गमन 3:3–4) और मानवीय देह में (यूहन्ना 1:1, 14,18; फिलिप्पियों 2:5–8;कुलुस्सियों 1:15,19, 2:9 ;इब्रानियों 1:1–3) तथा लोगों के जीवन में पवित्र आत्मा द्वारा प्रगट किया(रोमियो 8:8–9)।

मसीहियों को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दिया जाता है (मत्ती 28:19)। 'के नाम में' एक वचन है बहुवचन नहीं। परमेश्वर के नाम में प्रगट करता है कि परमेश्वर एक है, वह ही एकमात्र ईश्वीय सत्ता है(व्यवस्थाविवरण 6:4)। और 'पिता, और पुत्र और पवित्र आत्मा' दर्शाता है कि इस ईश्वरी एकता के स्वभाव में भी एक अन्दरूनी भिन्नता है। इसलिए ही यीशु को "परमेश्वर हमारे साथ", " परमेश्वर का पुत्र, यहां तक कि परमेश्वर कहा जाता है। इसी कारण पवित्र आत्मा को " परमेश्वर का आत्मा", " मसीह का आत्मा" " आप में विराजमान मसीह" कहा जाता है (रोमियो8:9–10; प्रेरितों 16:7) तथा परमेश्वर कहा जाता है (प्रेरितों 5:3,5)

पवित्र आत्मा को विरासत में मिले गुण।

पवित्र आत्मा को विरासत में, पवित्रता (रोमियों 1:4), जीवन (रोमियो 8:2), प्रेम (रोमियों 15:30) सत्य(यूहन्ना 16:13) तथा अनन्त सत्ता (इब्रानियों 9:14) जैसे परमेश्वर के गुण मिले हैं। सत्य व प्रेम अलग अलग या अकेले में विद्यमान होने वाले गुण नहीं हैं, परन्तु उन्हें त्रिएकता के व्यतित्वों के बीच में उत्पत्ति से पहले से साझा किया गया है (अर्थात ईश्वरीय स्वभाव के आन्तरिक भिन्नता में)। लेकिन सृष्टि की रचना होने के बाद सत्य और प्रेम को लोगों के बीच में भी साझा किया गया।

जगत के साथ सम्बन्ध में पवित्र आत्मा की विशेषताएं।

जगत के साथ सम्बन्ध के संदर्भ में पवित्र आत्मा में परमेश्वर के गुण भी हैं।

सर्वव्यापी (हर जगह उपस्थित होने की योग्यता): परमेश्वर (भजन 139: 7–10) तथा पवित्र आत्मा (यूहन्ना 14:16–17)।

सर्वशक्तिमान (सारी सामर्थ्य का अधिकारी): परमेश्वर (उत्पत्ति 1:1–2) तथा पवित्र आत्मा (भजन 104:30)।

सर्वज्ञानी (हर चीज़ को जाने की योग्यता): परमेश्वर (भजन 139:1–4) व पवित्र आत्मा (1कुरिन्थियों 2:10–11)।

3. पवित्र आत्मा के नाम

पुराने नियम में

पुराने नियम में हम करीब 90 बार 18 अलग अलग नामों के साथ पवित्र आत्मा के जिक्र को पाते हैं। उनमें से कई नाम परमेश्वर के साथ उसके सम्बन्ध को दर्शाते है, जैसे 'परमेश्वर का आत्मा'। कई नाम उसके चरित्र को प्रगट करते हैं जैसे 'पवित्र आत्मा', कई नाम लोगों के जीवन में उसके कामों को प्रगट करते हैं, जैसे" बुद्धि का आत्मा'' (यशायाह11:2)।

नये नियम में

नया नियम 254 बार सीधे तौर पर 39 अलग अलग नामों के साथ पवित्र आत्मा का जिक्र करता है। कई नाम पिता (मत्ती 10:20) और पुत्र के साथ (रोमियों 8:9–10)। कई नाम तो पवित्र आत्मा की अपनी ईश्वरीयता को प्रगट करते हैं, जैसे " परमेश्वर का आत्मा " (2 कुरिन्थियों 3:17)। कई नाम उसके मूल चरित्र को व्यक्ति करते हैं, जैसे, " पवित्र

आत्मा"। कई नाम मसीहियों के साथ उसके सम्बन्ध को प्रगट करते हैं और कई उसके द्वारा किये गये कामों के साथ, जैसे "सत्य का आत्मा"(यूहन्ना 14:17) व " अनुग्रह का आत्मा(इब्रानियों 10:29)।

4. पवित्र आत्मा के चिन्ह

आग, हवा, तथा पानी पवित्र आत्मा के किन लक्षणों को प्रगट करते हैं?

प्रेरितों के काम 2:1–4;(मत्ती 3:11)। "पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा" का अर्थ है कि यीशु मसीह विश्वासियों को पवित्र आत्मा के वरदान से आशीषित करेगा(और उन्हें अपने राज्य में इकट्ठा करेगा), लेकिन जितने लोग उस पर विश्वास करने से इनकार करते हैं उन्हें वह नरक के द्वारा उन्हें दण्ड देगा। पिन्तेकुस्त के दिन " आग की सी फटती हुई जीभें " पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के वरदान का चिन्ह था जिससे जुनून व प्रेम के साथ सुसमाचार प्रचार किया जा सके (प्रेरितों 6:10)

यूहन्ना 3:3–8; प्रेरितों 2:2 " आँधी का चलना" आत्मा की अप्रत्यक्ष शक्ति को प्रगट करता है। और '' हवा जहां चाहती है वहा बहती है'' पवित्र आत्मा के नये जीवन व नये जन्म के सन्दर्भ में किये जैसे निश्चित और अनुमान से परे कामों को प्रदर्शित करता है।

2 कुरिन्थियों 1:21–22। 'तेल से अभिषेक " का अर्थ है कि मसीहियों ने पवित्र आत्मा को उसकी पूरे गुणों के साथ प्राप्त कर लिया है और वे संसार में अपनी भविष्यसूचक,याजकीय, और राजकीय सेवकाई के लिए तैयार हैं। "मुहर दारा छाप लगने' का अर्थ है कि मसीहियों ने सच में पवित्र आत्मा की सहायता द्वारा नया जन्म प्राप्त कर लिया है, वे परमेश्वर के हैं और परमेश्वर उनकी सुरक्षा करता है। 'बयाना देने'' का अर्थ है मसीहियों ने पहले ही पवित्र आत्मा को गारन्टी के रूप में प्राप्त कर लिया है तथा भविष्य में परमेश्वर उन्हें बहुत सी चीजों को प्रदान करने वाले हैं।

ख. लोगों के जीवन में परमेश्वर पवित्र आत्मा का कार्य

पवित्र आत्मा धरती पर इस समय यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करता है और अविश्वासियों व विश्वासियों के जीवन में काम करता है।

1.पवित्र आत्मा यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करता है।

पवित्र आत्मा इस धरती पर प्रभु यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व है।

पढ़ें। यूहन्ना 14:16–18; 16:13–15

ध्यान दें। यीशु ने यह प्रतिज्ञा की थी कि वह अपने चेलों को अनाथों के समान नहीं छोड़ेगा, वरन वह पवित्र की रूप में स्वयं वापस आयेगा। 'सलाहकार' शब्द को सबसे बेहतर 'प्रतिनिधी ' शब्द से अनुवाद किया जा सकता है, कोई ऐसा जन जो आपकी सहायता करने, खास तौर पर आपके विरूद्ध काम करने वालों तथा आप पर दोष लगाने वालों से बचाने के लिए। इसी कारण उसे, सलाहकार, बिचवई,सहायक, मददगार आदि नामों से सम्बोधित किया गया है।

पवित्र आत्मा प्राथमिक तौर पर मसीहीयों का प्रतिनिधित्व नहीं करता वरन वह यीशु मसीह का प्रतिनिधी है। वह मसीहियों के बीच में यीशु मसीह का प्रतिनिधी है(रोमियों 8:9–10), जो मसीहियों के बीच में यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करता है। उसने चेलों को यीशु मसीह द्वारा कही गयी बातों को याद दिलाया, जिसकी वजह से वे नये नियम में सुसाचार को लिख सके(यूहन्ना14:26)। उसने यीशु के बारे में गवाही दी(यूहन्ना 15:26), जिसके कारण मसीह के चेले जगत के छोर तक मसीह की गवाही दे सके (प्रेरितों 1:8)।

पवित्र आत्मा ने मसीह के चेलों की सम्पूर्ण सत्य में अगुवाई की, जो उसने मसीह से सुना था ,जिसकी वजह से मसीह के चेले नये नियम को लिखने का काम पूरा कर सके थे। वह मसीह के प्रार्थना विषयों को लेकर विनती करता, मसीह के नाम की सुरक्षा करता तथा उन चीज़ों की सुरक्षा करता है जिनमें मसीह को रूची हो। वह मसीह की धरोहर की रखवाली करता है। और मसीहियों को मसीह की समानता में रूपान्तरित करता है (इब्रानियों 7:25; 9:24)। (इसके अलावा मैनुएल 2,परिशिष्ट 2 को देखें)।उसके मानवीय स्वभाव के अनुसार यीशु मसीह अभी स्वर्ग में है(प्रेरितों 2:33), लेकिन उसके ईश्वरीय स्वभाव के अनुसार यीशु मसीह सर्वव्यापी हैः वह स्वर्ग में (इफिसियों 1:20–21) और पृथ्वी पर

(मत्ती 28:20) विराजमान है। पवित्र आत्मा भी सर्वव्यापी हैः वह स्वर्ग में(यूहन्ना 4:24,रोमियो 8:26–27) तथा पृथ्वी पर (प्रेरितों के काम 2:33) उपस्थित है।

यीशु मसीह पवित्र आत्मा के रूप में मसीहियों में विद्यमान है।

पढ़ेंः यूहन्ना 14:16

ध्यान देंः यीशु मसीह के स्वर्ग में उठा लिए जाने से पहले, वह इस धरती पर लोगों के बीच में परमेश्वर के प्रतिनिधित्व के रूप में था–वह ''परमेश्वर हमारे साथ है'' के रूप में था(मत्ती 1:23)। लेकिन यदि मसीह की देह के सन्दर्भ में कहा जाए तो, यीशु मसीह इस धरती को छोड़कर स्वर्ग में चला गया(लूका 24:50; प्रेरितों 1:9)।

स्वर्ग से ही यीशु ने मसीहियों के लिए '' एक और प्रतिनिधित्व या सलाहकार भेजा''। यीशु मसीह का अर्थ ' कोई दूसरा व्यक्ति नहीं' लेकिन 'जैसे वह परमेश्वर का पहले प्रतिनिधी था ठीक वैसे ही यह भी परमेश्वर का प्रतिनिधी है'': जो लोगों के बीच में परमेश्वर पिता और पुत्र दोनों का प्रतिनिधित्व करेगा।

यीशु के देह धारण करने के समय में वह इस धरती पर परमेश्वर का प्रतिनिधी था। वह परमेश्वर था जिसने मनुष्य का रूप धारण करके मनुष्य के बीच में डेरा किया। वर्तमान काल में पवित्र आत्मा इस धरती पर परमेश्वर पिता तथा पुत्र दोनों का प्रतिनिधित्व करता है। पवित्र आत्मा आज वह सब कुछ है और करता है जो अगर यीशु इस धरती पर आज विद्यमान होने की दशा में करते।

जब यीशु मसीह अपनी शारीरिक अवस्था में इस धरती पर थे, तो वह एक विशेष स्थान (फिलिस्तीन) तथा मानवीय इतिहास के विशेष काल (लगभव 4 ई.पू से लेकर 30 ई.पश्चात तक) सीमित थे। लेकिन यीशु मसीह को परमेश्वर के दाहिने हाथ द्वारा उठाकर परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठने के बाद(इफिसियों 1:20–21; 1 पतरस 3:22), उसने परमेश्वर पिता से पहले पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा प्राप्त किया और फिर उस प्रतिज्ञा को (अर्थात उस आत्मा के प्रत्यक्ष व श्रवणीय प्रभाव को) धरती पर रहने वाले मसीहियों पर उण्डेल दिया(प्रेरितों 2:33)। परमेश्वर के आत्मा या मसीह के आत्मा के रूप में पवित्र आत्मा किसी स्थान या इतिहास के किसी काल तक सीमित नहीं है। पवित्र आत्मा में मानवीय स्वभाव नहीं है परन्तु वह मनुष्यों (विश्वासियों)के बीच विराजमान है। इस धरती पर पवित्र आत्मा यीशु मसीह के प्रतिनिधित्व के रूप में यीशु के कामों को पूरा करता है। पवित्र आत्मा अनन्त तक मसीहियों के साथ व उनमें रहता है(यूहन्ना 14:16–17)।

पवित्र आत्मा और यीशु मसीह को अलग नहीं किया जा सकता, और न ही इन्हें अलग अलग ग्रहण किया जा सकता है क्योंकि ये दोनो मिलकर एक ही ईश्वरी मूल हैं और ईश्वरीय स्वभाव भी एक सा ही है। पवित्र आत्मा'यीशु मसीह का रूप ही है''। वह ''परमेश्वर का आत्मा'' या ''मसीह का आत्मा'' है जो मसीहियों में वास करता है(रोमियों 8:9–10; 1 पतरस 1:10–12)। पवित्र आत्मा मसीहियों के लिए वह सब कुछ करता है जो मसीह इस दुनिया में अगर मौजूद होता तो उस अवस्था में होता।

2. पवित्र आत्मा संसार को उसके पापों के सम्बन्ध में निरूत्तर करता है।

खोजें और चर्चा करें। पवित्र आत्मा का इस संसार में क्या कार्य है, जिसमें मसीही व गैर मसीही दोनों ही शामिल हैं?

पढ़ें। यूहन्ना 3:16–18; 16:8–11; रोमियो 1:18,28–32।

ध्यान दें। यहां पर निरूत्तर करने का अर्थ खुलासा करना,निरूत्तर करना या डांटना, खण्डन करना तथा छोटे शब्दों में कहें तो कायल करना है।

पवित्र आत्मा लोगों को उनके पापों के प्रति निरूत्तर करता है।

पवित्र आत्मा पाप की सच्चाई को प्रगट करता व उसका खुलासा करता है।

पवित्र आत्मा लोगों की भक्तिहीन दशा को व्यक्त करता है, जिसका अर्थ है कि वह लोगों द्वारा उस परमेश्वर के प्रति गलत तरीके स्थापित किये जा रहे सम्बन्धों को प्रगट करता है जिसने अपने आपको जगत की सृष्टि के समय तथा बाइबल में व्यक्त किया था। वह उनके जीवन में परमेश्वर के प्रति प्रेम में अभाव को प्रगट करता है। वह परमेश्वर से उनकी दूरी और उनके विद्रोह को प्रगट करता है। वह उन पर प्रगट करता है कि वे कितने आत्म–केन्द्रित, आत्म–निर्भर, अपने आप निर्णय लेने वाले, खुद को धर्मी ठहराने वाले, आत्म–सन्तुष्ट, अपनी बढ़ाई चाहने वाले,खुद में खुश और अपनी ही इच्छा को पूरा करने वाले हैं।

पवित्र आत्मा लोगों की दुष्टता को प्रगट करता है,अर्थात वह लोगों से उनके अनुचित रिश्तों को प्रगट करता है। वह लोगों के प्रति उनके प्रेम में अभाव को व्यक्त करता है। वह उनको उन कामों के निमित्त कायल करता है जिन को करने के लिए परमेश्वर ने मना किया है, तथा जिन कामों को परमेश्वर ने करने के लिए कहा है मगर वह नहीं करते हैं।

अतः वह लोगों की असलियत को उनके सामने लाकर रख देता है, अर्थात वह परमेश्वर की पवित्र ज्योति व लोगों के असली चरित्र व आचरण को प्रगट करता और उन पर जाहिर करता है कि जिन लोगों के साथ उनके अच्छे सम्बन्ध होने चाहिए असल में उनके साथ उनके समबन्ध कैसे हैं।

पवित्र आत्मा लोगों को उनकी पापमय अवस्था की गम्भीरता के प्रति कायल करता,डांटता, खण्डन करता है। वह उनके हृदयों या मनों से बातें करने के द्वारा डांटता है कि वे गलत, भक्तिहीन, दुष्ट और परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करने के दोषी हैं। वह उन सभी बहानों व बहस का खण्डन करता है जो हम परमेश्वर से बनाते या करते हैं। वह परमेश्वर की नज़रों में उनके द्वारा किये गये अपराधों के प्रति उन्हें निरूत्तर करता और उन्हें परमेश्वर के सम्मुख लज्जित करता है। वह उन्हें इस बात का एहसास दिलाता है कि वे परमेश्वर के पवित्र क्रोध व न्याय के अधीन हैं(यूहन्ना 3:18,36)। वह लोगों को एहसास दिलाता है कि उनके पापों के कारण वे मृत्यु दण्ड के योग्य है(रोमियो 6:23)। अतः वह लोगों को उनके पापों की गहराई का एहसास दिलाता तथा उनके अपराधों की गहराई, लज्जा और पश्चाताप के प्रति निरूत्तर करता है।

पवित्र आत्मा लोगों को धार्मिकता के प्रति निरूत्तर करता है।

पवित्र आत्मा परमेश्वर की धार्मिकता को और उस धार्मिकता को प्रगट करता है जिसकी वह मनुष्यों से अपेक्षा करता है।

पवित्र आत्मा लोगों को उस धार्मिकता का एहसास दिलाता है जो परमेश्वर ने लोगों की ओर से स्थापित की है। जिसका अर्थ लोगों को सच्चाई के प्रति कायल करना तथा इस वास्तविकता और ज़रूरत को प्रगट करना है कि परमेश्वर ने लोगों को पापों तथा न्याय से बचाने के लिए यीशु मसीह के द्वारा किन किन कामों को किया है। वह लोगों को यह समझाता है कि यीशु मसीह के लिए मानव जाति के पापों का प्रायश्चित करने के लिए मानव रूप धारण करना व क्रूस पर अपने प्राण देना अति आवश्यक था। और वह लोगों को यह समझाता है कि यीशु मसीह इस संसार को जीतने के लिए मृतकों में से जी उठे और स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान है।

पवित्र आत्मा लोगों को उस धार्मिकता के प्रति भी निरूत्तर करता है जिसकी वह मनुष्यों से मांग करता है। जब तब लोग परमेश्वर की दृष्टि में 100 प्रतिशत धार्मिकता हासिल नहीं कर लेते, उनका उद्धार नहीं हो सकता। यदि हम सारी व्यवस्थाओं को मानते हैं और किसी एक को पूरा करने में चूक जाते हैं तब भी हम व्यवस्था के प्रति गुनहगार है, और परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरते हैं (याकू 2:10; गलातियों 3:10)! वह लोगों को कायल करता है कि उन्हें यीशु मसीह पर विश्वास करना और उसकी ओर से सिद्ध धार्मिकता को प्राप्त करना चाहिए (2 कुरिन्थियों 5:21)। अतः वह लोगों को बतलाता है कि अगर वे पश्चाताप व प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करें तो परमेश्वर की नज़रों में धार्मिक बनना सम्भव है।

पवित्र आत्मा लोगों को न्याय के प्रति निरूत्तर करता है।

पवित्र आत्मा परमेश्वर के न्याय को प्रगट करता है। पवित्र आत्मा लोगों को इस बात का एहसास दिलाता है कि अन्त में परमेश्वर न्याय करेंगे, और नरक भी एक जगह है। वह लोगों को उन सत्यों, वास्तविकताओं और परमेश्वर द्वारा न्याय किये जाने की जरूरत से अवगत कराता है जो सत्य व यीशु को अस्वीकार करते है पर वे पड़ सकते हैं। पवित्र आत्मा लोगों को इस बात का एहसास दिलाता है कि वे पूरी तरह से भटके हुए और इस कारण दण्ड के भागीदार हैं। वह लोगों को कायल करता है कि वे पहले से ही पवित्र व धर्मी परमेश्वर की उपस्थिति में दोषी हैं और यदि वे पश्चाताप करके अपने आपको शुद्ध नहीं करते तो उन्हें हमेशा का दण्ड मिलेगा।

3.पवित्र आत्मा मसीहियों में काम करता है।

खोजें व चर्चा करें। मसीहियों के जीवन में पवित्र आत्मा का क्या काम है?

पिन्तेकुस्त के दिन के बाद से पवित्र आत्मा मसीहियों के लिए उन सारे कामों को सम्भव कर रहा है जिसे यीशु मसीह ने क्रूस के द्वारा सम्भव किया था। जिन चीजों का यीशु मसीह ने इतिहास में हासिल किया था उन्हीं उपलधियों को पवित्र

आत्मा विश्वासियों के जीवन में वर्तमान में लागू कर रहा है। वह लोगों को नया बनाता है,वह उनकी परमेश्वर के वचनों को सुनने में मदद करता है, वह उन्हें आज्ञा मानना सिखाता और शुद्ध करता है।

पवित्र आत्मा लोगों को नया जन्म प्रदान करता है।

यूहन्ना 3:3,5 **पढ़ें।**

ध्यान दें। *नये जन्म का अर्थ परमेश्वर के समय में उसकी इच्छा को पहिचानना है।* (2 थिस्लुनिकियों 2:13–14)। परमेश्वर की अनन्त इच्छा कुछ लोगों को चुनना है जो पवित्र आत्मा द्वारा शुद्ध किये जाने तथा सत्य पर विश्वास करने के द्वारा उद्धार प्राप्त कर सकें। परमेश्वर ने अपनी इच्छा के मत के अनुसार सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा उन्हें पहिले से ही ठहराया है। वह पवित्र आत्मा के द्वारा उन्हें नया जन्म देता तथा उन्हें नवीन करता है(यूहन्ना 3:3–8)। वह उन्हें अपने ईश्वरीय स्वभाव में भागीदार बनाता है(2 पतरस 1:4), वे उसकी ईश्वरीयता के भागीदार नहीं परन्तु उसके ईश्वरीय विशेषताओं जैसे प्रेम, पवित्रता और धार्मिकता के भागीदार होते हैं। पवित्र आत्मा इस तरह से काम करता है कि विश्वासी लोग भी अपने जन्म व नवीनीकरण के बारे में जान सकें व महसूस कर सकें। वह मसीहियों के हृदय में गवाही देता है कि वे परमेश्वर की सन्तान हैं और परमेश्वर उनमें और वे परमेश्वर में जीवन व्यतीत करते हैं(रोमियों 8:16; 1 यूहन्ना 2:20 27;4:13)। मसीही जन कभी 'परमेश्वर' नहीं बनते, लेकिन परमेश्वर अपनी आत्मा के द्वारा मसीहियों के जीवन में वास करता है। पवित्र आत्मा की इच्छा मसीह द्वारा कलवरी क्रूस पर पूरे किये गये कामों को लेकर मसीहियों के जीवन में इस्तेमाल करके मसीह की महिमा करना है।

नया जन्म परमेश्वर का सर्वश्रेष्ठ काम है(तीतुस 3:3–7)। इसलिए मसीही लोग कहते हैं कि उनका उद्धार परमेश्वर की दया या अनुग्रह से हुआ है (इफिसियों 2:8)। आत्मा द्वारा नया जन्म दिये जाने का काम पापियों के विवेक को बुरी तरह छेद देता है और उसका मन बदल जाता है, जिसका अर्थ है की वो अपनी आत्म–निर्भरता पर भरोसा नहीं करता, पापमय संसार से दूर हो जाता तथा शैतान से दूर होकर परमेश्वर के पास चला जाता है(प्रेरितों 2:37–42;26:18)। मन परिवर्तन का अर्थ पापों से पश्चाताप तथा मसीह पर विश्वास करना होता है। और विश्वास परमेश्वर की श्रेष्ठ बुलाहट (रोमियों 10:17), परमेश्वर के अनुग्रह के वरदान(इफिसियों 2:8; फिलिप्पियों 1:29 ;प्रेरितों के काम 13:48) और उसके साथ धर्मी ठहराये जाने वाले कामों का परिणाम होता है(रोमियों 5:1)। विश्वास उस खाली हाथ के समान है जिसके द्वारा वह परमेश्वर के अनुग्रह से मिलने वाले उद्धार को स्वीकार करता है (यूहन्ना 1:12)। सुसमाचार प्रचार के द्वारा लोगों को मन बदलने के लिए पुकारा जाता है (मरकुस 1:15;प्रेरितों 3:19; 26:18; रोमियों 10:14–17)। लोगों के विश्वास पूर्ण प्रतिउत्तर देने के कारण, लोग धर्मी ठहरते हैं (रोमियों 3:22)। धर्मी ठहराये जाने के परिणामस्वरूप परमेश्वर के साथ हमारा नया रिश्ता कायम होता है(रोमियो 5:1), हमें लेपालक पन की आत्मा प्राप्त होती है (रोमियों 8:15–16;इफिसियों 1:4–5,13; प्रेरितों 15:7–11) जिसका अर्थ यह स्वीकार करने से है कि वे परमेश्वर की सन्तान है। धर्मी ठहराये जाने के फलस्वरूप आप पवित्र व नया जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

पवित्र आत्मा लोगों की परमेश्वर के वचनों को सुनने में मदद करता है।

पढ़ें। यूहन्ना 16:13–15; 14:26।

ध्यान दें। बाइबल पवित्र आत्मा का प्रमुख हथियार है, यह परमेश्वर के वचन हैं जिनके द्वारा वह मसीहियों व गैर मसीहियों के मन,हृदय और जीवनों को आर पार छेदता है। पवित्र आत्मा लगातार बाइबल के कुछ अनुच्छेदों को मसीहियों को उनके जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में सिखाने, प्रेरित करने और बदलने के लिए इस्तेमाल करता है(इफिसियों 6:17; इब्रानियों 4:12)। वह विश्वासियों की बाइबल के सभी सत्यों में अगुवाई करता और उन सभी बातों के बारे में बताता है जिनकी शिक्षा यीशु मसीह ने दी थी (यूहन्ना 16:13–15; 14:26)।

बाइबल का प्रत्येक वचन आत्मा के द्वारा प्रेरित है और उसमें कोई गलती नहीं है। सम्पूर्ण बाइबल मसीही सिद्धान्तों व जीवन की परिमाप से परिपूर्ण है। बाइबल सत्य की शिक्षा देने, पाप का खुलासा करने तथा बहानों या परमेश्वर के विरूद्ध की जाने वाली बहस का खण्डन करने, गलतफहमियों को ठीक करके लोगों को परमेश्वर साथ पुनः जोड़ने, तथा उन्हे वे काम सिखाने के जो परमेश्वर की दृष्टि में ठीक हैं तथा लोगों को परमेश्वर की योजनाओं को पूरा करने हेतू तैयार करने में लाभदायक साबित होती है(2 तीमुथियुस 3:16–17)।

परमेश्वर का वचन होने के नाते बाइबल सत्य है और पवित्र आत्मा सत्य का आत्मा है(यूहन्ना 17:17; 14:17)। बाइबल में इससे सम्बधित परमेश्वर के वचन वहां के लोगों के स्वपनों और भविष्यवाणियों का विरोध करत हैं (यिर्मयाह 23:9–32)। यिर्मयाह 23 में, झूठे भविष्यवक्ताओं की पहिचान यह थी कि वे भविष्य को लेकर अनुमान लगाना पसन्द करते थे (उदाहरण के तौर पर, भविष्य में इस्राएल को कोई नुकसान नहीं होगा) जबकि सच्चे भविष्यवक्ताओं की विशेषता यह थी कि उन्होने सदैव परमेश्वर के प्रकाशन या इच्छा को लोगों के सामने वयक्त किया करते और उनकी पश्चाप करने में अगुवाई करते थे। मसीहियों को हमेशा आत्मा द्वारा ही बातों की सत्यता को परखने के लिए उसे हमेशा परमेश्वर के वचनों के साथ मिलाकर देखना चाहिए। सच्चे मसीही लोग कभी परमेश्वर के लिखित वचनों से ज्यादा कुछ करने का प्रयास नहीं करते (1 कुरिन्थियों 4:6)। संक्षेप में पवित्र आत्मा बाइबल के द्वारा विश्वासियों की अगुवाई करता है। इसी कारण बाइबल को अपने जीवन में पढ़ना,सुनना, अध्ययन करना,मनन करना उसे कण्ठस्थ करना और इस्तेमाल करना अति महत्वपूर्ण है।

पवित्र आत्मा मसीहियों की परमेश्वर के वचनों का मानने में सहायता करता है।

पढ़ें। 1 पतरस 1:2

ध्यान दें। पवित्र आत्मा विश्वासियों को बाइबल में छुपी सच्चाईयों को समझने में सहायता करता है(इफिसियों 1:17–18)। वह बाइबल की सच्चाईयों को लेकर मसीहियों के मन,ह्रदय और उनके जीवन में इस्तेमाल करता और उनकी अधिकाई से परमेश्वर व उसके वचनों के अधीन होने में सहायता करता है। पवित्र आत्मा द्वारा शुद्धिकरण के काम द्वारा मसीही जन अपने जीवन में यीशु मसीह की बातों का पालन करने लगता है(1 पतरस 1:2)। परमेश्वर ने अपनी आज्ञा मानने वाले लोगों को अपना पवित्र आत्मा दिया है(प्रेरितों 5:32)। इसलिए पवित्र आत्मा कहता है, '' आज, यदि तुम उसकी वाणी को सुनों तो अपना मन कठोर न करना जिस प्रकार क्रोध दिलाने के समय किया था' (इब्रानियों 3:7–8)। इस कारण विश्वासियों की यह जिम्मेदारी है कि वे इस बात का ध्यान रखें कि उनके बीच में कोई पापमय (भक्तिहीन, दुष्ट), अविश्वासी (सन्देहयुक्त, आलोचक) या कठोर (विरोध करने वाला या विद्रोही) तथा जीवित परमेश्वर से दूर होने वाला ह्रदय न हो। बल्कि, मसीहियों को एक दूसरे को बाइबल में लिखें वचनों को दैनिक जीवन में मानने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए (इब्रानियों 3:12–13)। इस कारण जिसके कान हो वह सुन ले कि आत्मा इस संसार में विश्वासियों की मण्डली अर्थात कलीसिया से क्या कहता है(प्रकाशितवाक्य 2:1,7)। इस कारण जो लोग आत्मा के चलाये चलते हैं, वे सदैव परमेश्वर व उसके वचनों के अधीन करना चाहते हैं, कर सकते हैं और निश्चित तौर पर करेंगे। परमेश्वर की आज्ञा मानना तथा उसे प्रसन्न करना उनके जीवन का लक्ष्य बन जाता है। लेकिन जो लोग अपने पाप मय स्वभाव के अनुसार चलते हैं वे किसी भी कीमत पर परमेश्वर व उसके वचनों के अधीन जीवन व्यतीत न करना चाहते, न कर सकते और न ही करेंगे (रोमियों 8:5–8;कुलुस्सियों 1:9–12)। बाइबल में परमेश्वर के आत्मा के कामों की चर्चा करते समय ज्यादा ज़ोर ज्ञान प्राप्त करने पर नहीं दिया गया, वरन बाइबल में पहले से प्रगट किये गये परमेश्वर के ज्ञान का पालन करने पर ज़ोर दिया गया है।

पवित्र आत्मा मसीहियों को शुद्ध करता है।

पढ़ें। गलातियों 5:13–26

ध्यान दें। पवित्र आत्मा मसीहियों को मसीह की समानता में अधिक से अधिक रूपान्तरित करने के लिए शुद्ध करता है(2 कुरिन्थियों 3:17–18)। उनके जीवन में वास करने वाले पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा, मसीही लोग उनकी देह के धृणित कामों के लिए मृतक हो जाते हैं(रोमियो 8:13) । वे अपने पापमय मनुष्यत्व के अनुसार जीवन बिनाते से इनकार करके पवित्र आत्मा के चलाये चलने का निर्णय लेते हैं और फलस्वरूप उनमें पवित्र आत्मा के फल भी प्रगट होने लग जाते हैं। मनुष्य का पापमय स्वभाव यौन अनैतिकता और भोग विलास जैसे शारीरिक पापों में; और मूर्तिपूजा तथा जादू टोना जैसे पापों के द्वारा आत्मिक पाप; तथा स्वार्थी महत्वाकाक्षां और झगड़ों के द्वारा सामाजिक पाप प्रगट होता है। आत्मा के फल बुनियादी गुणों जैसे प्रेम, आनन्द, शान्ति ; सामाजिक सदगुणों जैसे धीरज, कृपा, भलाई तथा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता, लोगों के प्रति सज्जनता तथा अपने जीवन में संयम जैसे रिश्तों में प्रगट होते हैं।

"आत्मा के अनुसार चलना, " आत्मा की अगुवाई में होकर चलना" या " आत्मा के साथ चलना" इन सभी बातों का अर्थ है कि यीशु मसीह को अपने ह्रदय में प्रभु व स्वामी के रूप में रहने की अनुमति देता है, जो उसके जीवन पर प्रभुता करे, उसे ज़्यादा से ज़्यादा अपने रूप में ढाले, जैसे जैसे वह अपने आप को मसीह के अधिकार व इच्छा के अधीन करते हैं।

मसीहियों के जीवन में पवित्र आत्मा के मौजूद होने के प्रत्यक्ष प्रमाण हम आत्मा के फलों में देख सकते हैं; खास तौर पर प्रेम के द्वारा (गलातियों 5:13–26; इफिसियों 3:16–17)।

सारः पवित्र आत्मा लोगों और उनकी भटकी अवस्था के सन्दर्भ में बाइबल के आधार पर गहनता से कायल करता है, ताकि वे यीशु को जानकर उसे महिमा दे सकें और बाइबल को समझकर उसका पालन कर सकें। पवित्र आत्मा परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के अनुसार मसीहियों के लिए प्रार्थना करता है (मैनुएल 2 की तथा परिशिष्ट 2 को देखे)। वह वास्तव में लोगों को रूपान्तरित करता है और लोग वास्तव में इस रूपान्तरण को महसूस करते हैं।

ग. कलीसिया में पवित्र आत्मा के कार्य

पिन्तेकुस्त के दिन, पवित्र आत्मा को उण्डेला जाना तीन बातों को प्रगट करती हैः
पिन्तेकुस्त यीशु की मसीह के रूप में उपाधि पर परमेश्वर की मुहर लगाना था। (प्रेरितों 2:32–36)
पिन्तेकुस्त कलीसिया के र्निमाण का उपलक्ष्य था। (प्रेरितों 2:37–47)
पिन्तेकुस्त के दिन चेलों को उनके कामों को पूरा करने की सामर्थ प्राप्त हुई (प्रेरितों 1:8)
आईये हम पवित्र आत्मा के इन तीनों कामों पर नज़दीकी से नज़र डालें।

1. मसीहियों के अनुभव से पवित्र आत्मा यीशु मसीह की महिमा करने वाला है।

खोजें व चर्चा करें। यीशु के सम्बन्ध में पवित्र आत्मा के क्या काम हैं?
ध्यान दें। मसीही कलीसियाओं में पवित्र आत्मा यीशु मसीह को केन्द्र बिन्दु बनाता है।

पवित्र आत्मा यीशु मसीह की निज जानकारी प्रदान करता है।
पढ़ें 2 कुरिन्थियों 4:6
ध्यान दें। पवित्र आत्मा अप्रत्यक्ष परमेश्वर के प्रकाशन का प्रत्यक्ष यीशु मसीह में होकर वर्णन कर देता है। वह परमेश्वर की ज्योति को विश्वासियों के हृदय में ज्योर्तिमय करता है, और जिस प्रकार से उसने यीशु मसीह पर परमेश्वर की विशेषताओं को प्रगट किया था उसी प्रकार से वह विश्वासियों के हृदय में परमेश्वर के महिमित गुणों को ज्ञान को प्रगट कर देता है(2 कुरिन्थियों 4:6; कुलुस्सियों 1:15)। पवित्र आत्मा बाइबल के प्रचार व शिक्षाओं द्वारा उन पर जीवित परमेश्वर का ज्ञान प्रगट करता है, जिसमें यीशु मसीह का प्रकाशन भी शामिल है (यूहन्ना 20:30–32; प्रेरितों 8:35)।

पवित्र आत्मा यीशु मसीह की गवाही देता है।
पढ़ें यूहन्ना 15:26; 16:14।
ध्यान दें। पवित्र आत्मा अपने आप को केन्द्र बिन्दू नहीं बनाता, वरन वह यीशु मसीह पर केन्द्रित होकर विश्वासियों के जीवन और अनुभवों में यीशु मसीह को महिमा प्रदान करता है।

पवित्र आत्मा मसीह के वचनों को ही बोलता है।
पढ़ें यूहन्ना 14:26; 16:14–15।
ध्यान दें। पवित्र आत्मा मसीह के वचनों से अलग कोई बात नहीं करता।

पवित्र आत्मा सच्चे विश्वासियों को यीशु मसीह को अपना प्रभु स्वीकार करने के लिए प्रेरित करता है।
पढ़ें। 1 कुरिन्थियों 12:3
पवित्र आत्मा मसीहियों की अपने दैनिक जीवन में यीशु मसीह को अपना प्रभु और स्वामी प्रदर्शित करने में सहायता करता है। वह उन्हें यीशु मसीह के अधीन होने तथा उसकी आज्ञाओं को मानने में सहायता करता है(रोमियो 8:5–8; 1 पतरस 1:2)
साराशंःआत्मा से परिपूर्ण स्थान की परख करने के लिए, चाहे वह व्यक्तिगत हो या सामुहिक अनुभव हो यह देखना जरूरी है कि क्या वहां पर यीशु मसीह को स्थान दिया जा रहा है।

2. पवित्र आत्मा कलीसिया का प्रबन्धक है।

खोजें और चर्चा करें। पवित्र आत्मा कलीसिया में क्या काम करता है?

पवित्र आत्मा कलीसिया को आत्मिक घर बनाता है।

इफिसियों 2:22 को **पढ़ें**।

ध्यान दें। पिन्तेकुस्त के दिन से पहले सारे चेले बहुत से मुक्त व्यक्तियों का समूह थे। लेकिन पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद वे गठकर एक मसीह की देह बन गये, जो महज कोई इमारत नहीं, कोई संगठन नहीं बल्कि एक जीवित जीव है (1 पतरस 2:4–5)

पवित्र आत्मा एक मसीही व्यक्ति को कलीसिया को समर्पित सदस्य बनने में सहायता करता है।

पढ़ें। 1 कुरिन्थियों 12:11–13

ध्यान दें। केवल पवित्र आत्मा की किसी व्यक्ति को कलीसिया का असली सदस्य बनाता है, जो मसीह की देह है। "आत्मा की द्वारा बपतिस्मा जिसका अर्थ नया जन्म पाना है, कोई भी व्यक्ति असल में मसीही और कलीसिया अर्थात मसीह की देह का समर्पित सदस्य बनता है। नये जन्म के द्वारा मसीह विश्वासियों में और विश्वासी मसीह में बस जाता है(यूहन्ना 1:12–13)। नया जन्म पाने के द्वारा मसीही जन की देह पवित्र आत्मा का मन्दिर बन जाती है और वह विश्वासी धरती पर मसीह के देह का एक अंग बन जाता है।

पवित्र आत्मा पुरनियों को मसीही मण्डली का एक सच्चा पहरूआ बना देता है।

पढ़ें। प्रेरितों 20: 17,28

ध्यान दें। केवल पवित्र आत्मा ही मुक्त कलीसियाओं में प्रभावशाली कार्य सम्भव बना सकता है, जो एक साथ मिलकर एक विश्वव्यापी कलीसिया बन जाती है। पवित्र आत्मा कुछ मुख्य कामों को करने के लिए पुरनियों को ठहराता है। चरवाहे या पासबान होने के नाते वे हमेशा लोगों पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं; हम किस की चरवाही करें जिसका अर्थ उनकी देखभाल करना, उन्हे खिलाना और उनकी सुरक्षा करना होता है। प्रबन्धक या निरिक्षक होने के नाते, वे खास ध्यान गतिविधियों पर लगाते है,खास तौर पर क्रमानुसार मण्डली के विभिन्न कामों को करने के प्रबन्ध में।

पवित्र आत्मा कलीसिया मैं ठोस सिद्धान्तों और उसके अभ्यास के लिए जिम्मेदार होता है।

पढें। प्रेरितों के काम 15:28 ; 2 तीमुथियुस 3:16–17

ध्यान दें। केवल पवित्र आत्मा कलीसिया की किसी चर्चा को बाइबल पर आधारित सामंजस्य की ओर दिशा प्रदान कर सकता है। वोटों द्वारा चुनाव करने या निर्णय लेने का तरीका बाइबल में प्रगट की गयी परमेश्वर की इच्छा का स्थान नहीं ले सकता। मसीही मण्डलियों अर्थात कलीसिया को सुनना चाहिए कि मसीह वास्तव में पवित्र आत्मा के द्वारा क्या कहना चाहता है(प्रकाशित वाक्य 2:1,7)।

पवित्र आत्मा सर्वश्रेष्ठ तरीके से मसीहियों को वरदान प्रदान करता है।

पढ़ें। रोमियों 12:4–8; 1 कुरिन्थियों 12:11

ध्यान दें। केवल पवित्र आत्मा ही फैसला करता है कि मसीहियों को कौन सा वरदान मिलना चाहिए। आत्मिक वरदानों का उद्देश्य कलीसिया का र्निमाण करना है। भिन्न प्रकार के वरदान इस बात को दर्शाते हैं कि परमेश्वर नहीं चाहता कि कलीसिया के सारे सदस्य या कलीसिया एक समान हो, वरन उनमें भिन्नता पायी जानी चाहिए। कलीसिया ऐसे लोगों से मिलकर नहीं बनी है जिसमें सारे लोग एक ही जैसे कपड़ें पहने हों या एक ही सी भाषा हो और वे सभा में एक ही प्रकार की सेवा निभाएं। जिस प्रकार से हमारी देह में बहुत से अंग होते हैं उसी प्रकार कोई भी संगठन विभिन्न प्रकार के लोगों, व्यक्तित्वों से मिलकर बना होता है। उनके विभिन्न प्रकार के आत्मिक वरदान पाये जाते हैं तथा उनके लक्ष्य भी भिन्न होते हैं। कई मसीही जन मुँह के समान हैं जो प्रचार या शिक्षा देने का काम करते हैं। वे सम्भवतः पासबान या सेवक या पुरनिये या शिक्षक की भूमिका के लिए उपयुक्त जन हैं। दूसरे मसीही जन ह्रदय के समान है जो लोगों पर दया करना तथा उनकी सेवा करना पसन्द करते हैं। उनके लिए बीमारों से मिलना, गरीबों व विक्लांगों की सहायता करना, नशे की लत के शिकार लोगों की देखभाल करना ज़्यादा अच्छा रहता हैं।

पवित्र आत्मा मसीही सभाओं व सम्मेलनों का निर्देशन करता है।

पढ़ें। इफिसियों 5:18–19; फिलिप्पियों 3:3।

ध्यान दें। केवल पवित्र आत्मा ही मसीही सभाओं या सम्मेलनों को आत्मा से परिपूर्ण बना सकता है। उदाहरण के तौर पर, आलोचनात्मक या न्यायवाचक होने के बजाय, मसीही लोग लगातार परमेश्वर को हर बात व हर परिस्थिति के लिए

धन्यवाद देने वाले होंगे। अतः पवित्र आत्मा उनकी चर्चाओं,गवाहियों,शिक्षाओं, अराधनाओं, प्रार्थनाओं और गीतों की अगुवाई करता है।

सारांशः पवित्र आत्मा ही प्रभावशाली ढंग से लोगों व गतिविधियों को संचालित करता है।

3. पवित्र आत्मा संसार भर में मसीही मिशन का संचालक है।

खोजें व चर्चा करें। मिशन के क्षेत्र में पवित्र आत्मा के क्या काम हैं?

पवित्र आत्मा लोगों को बुलाता व उनका मिश्नरी या सेवक होने के लिए चुनाव करता है।

पढ़ें। प्रेरितों 13:1–4(प्रेरितों 26:13–18; 1 कुरिन्थियों 1:1)

ध्यान दें। परमेश्वर बेहतर जानता है कि इस संसार में उसके जरूरी कामों को करने के लिए कौन व्यक्ति उपयुक्त है। वह विशेष मसीहियों को सेवक बनाने के लिए चुनता है। कलीसिया को ऐसे लोगों को सेवा करने के लिए बिल्कुल अलग कर देना चाहिए और उनको प्रार्थना में याद रखना चाहिए और यदि सम्भव हो तो उनकी आर्थिक सहायता भी करनी चाहिए।

पवित्र आत्मा हर एक मसीही सेवक को अलग लक्ष्य प्रदान करता है।

पढ़ें। 1 कुरिन्थियों 12:4–6,11(मरकुस 13:34; 1 कुरिन्थियों 3:5–9)

ध्यान दें। पवित्र आत्मा बेहतर जानता है कि कौन सा काम किस व्यक्ति के लिए उपयुक्त है। अतः पवित्र आत्मा हर एक व्यक्ति को इस तरह से वरदान वितरित करता है कि उसके द्वारा उन्हें अपने लक्ष्यों को पूरा करने में सहायता मिले।

पवित्र आत्मा बन्द दरवाज़ों को खोलता है।

पढ़ें। प्रेरितों 16:6–10(कुलुस्सियों 4:3; 1 कुरिन्थियों 3:5–9)

ध्यान दें। परमेश्वर बेहतर जानता है कि इस समय पर कौन सा स्थान ज़्यादा महत्वपूर्ण है और कौन से लोग उस काम को आगे ले जाने के लिए उपयुक्त हैं। केवल वह ही अपने कार्यकर्ताओं के लिए अवसर के बन्द दरवाज़ों को खोल सकता है। मसीह विशेष प्रकार की परिस्थितियों का प्रबन्ध करके पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवकों के मन में अगुवाई करते हुए अपने काम को आगे बढ़ाता है। पवित्र आत्मा ही अपने सेवकों की प्रमुख लोगों का हृदय परिवर्तन कराने के लिए अगुवाई करता है, जैसे कूश देश को वह सरकारी अधिकारी (प्रेरितों 8:29–35) तथा रोमी दारोगा (प्रेरितों के काम 10:19–29) । पवित्र आत्मा अपने सेवकों को परख की आत्मा भी प्रदान करता है ताकि वे शत्रु की बुरी युक्तियों को पहिचान सकें और अधिकार के साथ व्यवहार कर सके(प्रेरितो 13: 9–11)।

पवित्र आत्मा मसीही सेवकों को प्रोत्साहित करता है।

पढ़ें। प्रेरितों 13:49–52।

ध्यान दें। पवित्र आत्मा नये विश्वासियों को सताव की अवस्था में भी भरपूर आनन्द प्रदान करता है।

सारांश। पवित्र आत्मा महान आज्ञा को प्रभावशाली ढंग से पूरा करता है।

5	**प्रार्थना** (8मिनट)	(प्रतिक्रिया) परमेश्वर को प्रतिउत्तर देते हुए प्रार्थना करें

जो कुछ आपने आज सीखा है उसके प्रतिउत्तर में **अपनी बारी आने पर** समूह में छोटी **प्रार्थना करें।** या दो और तीन के झुण्डों में बंटकर, आज जो कुछ आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	(निर्धारित कार्य) अगले अध्याय के लिए

(**समूह का अगुवा** : समूह के सदस्यों को यह तैयारी गृह कार्य के रूप में लिखित तौर पर प्रदान करें या उन्हें डाउन लोड करने दें।)

1. **सर्मपणः** चेले बनाने के लिए समर्पित हों।

किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के जन के साथ 'स्त्री व पुरूष के बीच रिश्ते' बाइबल पर आधारित शिक्षाओं को पढ़ें, सिखाये या प्रचार करें।

2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना। रोमियो 5–8 अध्याय तक रोज एक अध्याय पढ़ते हुए परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताएं। पसन्दीदा सच्चाई के तरीके का इस्तेमाल करें। लिखें।
3. बाइबल अध्ययन। अगली बाइबल अध्ययन की घर ही में तैयारी करें। इफिसियों 6:1–4। विषयः ' मसीही परिवार की क्या विशेषताएं है"? बाइबल अध्ययन के पांच कदमों वाली पद्धति को इस्तेमाल करें। मुख्य बातों को लिखें।
4. प्रार्थनाः किसी व्यक्ति या किसी विशेष बात के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहे हैं (भजन 5:3)
5. चेलों को बनाने के सम्बन्ध में अद्यावधिक बना कर रखें। जिसमें परमेश्वर के साथ बिताये व्यक्तिगत समय पर टिप्पणियों,याद करी गयी टिप्पणियों को, बाइबल अध्ययन व इस तैयारी को शामिल कर सकते हैं। आराधना के गीत, शिक्षा तथा तैयारी की सामग्री को भी लिख सकते हैं।